

विचार बिन्दु

कोयल दिव्य आम रस पीकर भी अभिमान नहीं करती, लेकिन मंडक कीचड़ का पानी पीकर भी टरने लगता है। -प्रसंग रत्नावली

समर्थ को दोष क्यों नहीं?

परिष्कार पहले भी होती थी, अब भी होती है, आगे भी होती रहेगी। अपने लगभग साठे तीन दशकों के सेवा काल में और उसके बाद भी मैंने न जाने कितनी भूमिकाओं में परीक्षाओं के संचालन में सहभागिता की है। हर परीक्षा उससे जुड़े व्यक्ति की भी परीक्षा होती है। अब संतोष होता है कि सब कुछ ठीक-ठाक रहा, कोई प्रवाद नहीं हुआ। लेकिन समय के बदलने के साथ-साथ परीक्षा करवाना जटिल से जटिलतर होता जा रहा है। अब तो समय ऐसा आ गया है कि शायद ही कोई परीक्षा हो जो बिना किसी विवाद के संपन्न हो सकी हो। ऐसे में हाल में राजस्थान में रीट जैसी बड़ी परीक्षा का निर्विघ्न संपन्न हो जाना बहुत राहत की बात है।

परीक्षा भले ही निर्विघ्न संपन्न हो गई। कम से कम मेरे मन में बहुत सारी बातें छोड़ गई हैं। आज एक बात की ही चर्चा करूंगा। जैसे-जैसे परीक्षा कार्य संपन्न करवाना कठिन होता जा रहा है, उसे आयोजित करवाने वालों को बाँट दिए जाने वाले निर्देश भी बढ़ते जा रहे हैं। कभी इण्टरनेट बंद किया जाता है (जो पहले कभी नहीं किया जाता था। पहले तो होता भी नहीं था), तो कभी परीक्षार्थियों के लिए क्या पहनें और क्या न पहनें की विस्तृत दिशा-निर्देशिका जारी की जाती है। प्रश्न पत्र लौक हो जाने की आशंकाओं को ध्यान में रखते हुए इस आशय के निर्देश भी जारी किए जाते हैं कि एक निश्चित समय के परीक्षार्थियों को परीक्षा केंद्र में प्रवेश न दिया जाए। आज मैं ऐसे ही कुछ निर्देशों के बारे में चर्चा करना चाहता हूँ। जिस दिन परीक्षा आयोजित होती है उस के अगले दिन के अखबार इस तरह की खबरों से भरे रहते हैं कि कोई परीक्षार्थी केवल पांच मिनट देर से आया तो भी उसे परीक्षा केंद्र में नहीं घुसने दिया गया अथवा किसी महिला परीक्षार्थी से उसका मंगलसूत्र तक उतरवा दिया गया। ऐसी खबरें हम हर परीक्षा के बाद पढ़ते हैं।

इस बात भी ये सब पढ़ते को मिलाती। ऐसी खबरों में सहानुभूति का एक अतिरिक्त तड़का भी मार दिया जाता है। मसलन यह कि दो दिन पहले ही मां बनी एक युवती को सिरफ़ दस मिनट देर से आने पर परीक्षा केंद्र में नहीं घुसने दिया गया। समझना जा सकता है कि मां बनने वाली बात उसके प्रति अतिरिक्त सहानुभूति पैदा करने के लिए लिखी गई है। उसके प्रति सहानुभूति और परीक्षा करवाने वालों की निर्ममता के प्रति नाराजगी पैदा करने के लिए। माना जा सकता है कि अखबार का संपादकता बेहद संवेदनशील है और उससे किसी का दुख देखा नहीं जाता है। लेकिन क्या बात केवल इतनी-सी है? क्या इस बात का कोई रिश्ता हमारे सोच की बनावट से भी जुड़ता है?

जैसे मैंने पहले कहा, आजकल परीक्षा आयोजित करना बहुत जटिल होता जा रहा है। परीक्षार्थी पहले से अधिक चलाक हो गया है, उसके साथ इस परीक्षा रूपी किले में संध लगाने के लिए अन्य अनेक ताकतें भी जुड़ गई हैं। इसलिए जो परीक्षा आयोजित करते-करवाते हैं उन्हें भी पहले से ज्यादा सावधानी बरतनी पड़ती है। कुछ खास तरह की वेशभूषा का आग्रह, समय की पाबंदी का कठोरता से निर्वाह ऐसी ही सावधानियाँ हैं। देखने की बात यह है कि इस तरह की सावधानियाँ और पाबंदियाँ जीवन के अन्य अनेक क्षेत्रों में भी बरती जाती हैं। क्या हम उनको लेकर भी ऐसी ही मानवीय करुणा से भरी खबरें लिखते और टिप्पणियाँ करते हैं? या कुछ के प्रति हम अधिक सहानुभूतिशील होते हैं और कुछ के प्रति हम ज़रूरत से ज्यादा छिद्रान्वेषी हो जाते हैं? किनकी कड़ाई को हम सहज भाव से स्वीकार करते हैं और किनकी कड़ाई हमें दुखी करती है?

एक मामूली आदमी, मसलन कबाड़ी का रद्दी अखबार तोलने में डण्डी मारना हमारे लिए चर्चा का विषय बन जाता है। आप किसी पाँच सितारा होटल में जाकर बाहर बीस रुपये में मिलने वाली पानी की बोतल के दो सौ रुपये सहर्ष दे देंगे, लेकिन जब एक साइकिल रिक्शा वाला आपको एक से दूसरी जगह ले जाने के दस रुपये मांगेगा तो आपको लगेगा कि वह आपको लूट रहा है।

गिरफ्तार करती है तो कभी यह क्यों नहीं लिखा जाता कि इसने बस, एक छोटी-सी शालती ही तो की थी! और यही क्यों? अगर मैं जयपुर से सड़क मार्ग से दिल्ली जाते हुए ट्रैफिक जाम में फँस जाऊँ और दिल्ली से मुझे विदेश ले जाने वाली फ्लाइट छूट जाए तो मुझे होने वाली असुविधा और आर्थिक क्षति पर एक बूँद भी आँसू क्यों नहीं टपकाया जाता? किसी एयरलाइंस पर उस समय कोई सवाल क्यों नहीं उठाया जाता जब वह एक निश्चित समय पर बोर्डिंग गेट बंद कर देती है? इन सबकी व्यवस्थाओं को हम बहुत सहज भाव से स्वीकार करते हैं, लेकिन जब शिक्षा की दुनिया में किसी व्यवस्था का पालन (वह भी मज़बूरी में) किया जाता है तो हमारी सहानुभूति के परनाले बहने लगते हैं!

मेरा ऐसा मानना है कि पूरे समाज के लिए शिक्षा और उससे जुड़े लोग सॉफ्ट टारगेट हैं। जब भी किसी का जो चाहता है, इन्हें गरिया दिया जाता है। इसलिए कि ये ताकतवर नहीं हैं। बाबा तुलसीदास याद आते हैं: **समर्थ को नहीं दोष पुसाई**। पुलिस, न्यायपालिका, रेल, हवाई जहाज - ये सब समर्थ हैं। इसलिए हम इन पर कभी उंगली नहीं उठाएंगे। शिक्षक कमजोर हैं, उसे हर समय कटघरे में खड़ा करते रहेंगे।

यहाँ शिक्षक को अधिक व्यापक संदर्भ में लें - जो भी शिक्षा से जुड़ा काम कर रहा है, वह शिक्षक है।

परीक्षा से जुड़ा काम भी शिक्षा से जुड़ा काम है। वैसे, कमजोर और ताकतवर के बीच यह भेद यहीं नहीं, हमारे चारों तरफ नजर आता है। आप चौराहे पर ट्रैफिक नियंत्रित करने वाले अल्प वेतन भोगी सिपाही के तथाकथित भ्रष्ट आचरण पर तो खूब टिप्पणी करेंगे लेकिन उसको ऐसा करने के लिए विवश करने वाली व्यवस्था पर चुप रहेंगे। तथाकथित का प्रयोग मैंने जान बूझकर और सोच समझकर किया है। इस बात पर ज़रूर विचार करें कि ज़्यादातर मामलों में वह आपसे पैसे नहीं मांगता, आप खुद आगे बढ़कर उसे पैसे देते हैं। पाँच सौ रुपये का चालान कटवाने की बजाय सौ रुपये उसके हाथ में देकर आप खुद इमानदार बन जाते हैं। और उसे चोर घोषित कर देते हैं। अपने चारों तरफ हमें भ्रष्टाचार नहीं दिखाई देता है। कभी हम इस बात पर ध्यान नहीं देते हैं कि लोग जो अनाप शानना खर्चा कर रहे हैं वह आ कहां से रहा है। बीस तीस हजार की तनखाह वाला बोलेंगे मैं घुमता है लेकिन वह हमारी आँखों में नहीं खटकता है। ये सब हमारे लिए सदा सम्मानित बने रहते हैं। लेकिन एक मामूली आदमी, मसलन कबाड़ी का रद्दी अखबार तोलने में डण्डी मारना हमारे लिए चर्चा का विषय बन जाता है। आप किसी पाँच सितारा होटल में जाकर बाहर बीस रुपये में मिलने वाली पानी की बोतल के दो सौ रुपये सहर्ष दे देंगे, लेकिन जब एक साइकिल रिक्शा वाला आपको एक से दूसरी जगह ले जाने के दस रुपये मांगेगा तो आपको लगेगा कि वह आपको लूट रहा है।

ऐसा नहीं है कि शिक्षा की दुनिया में सब साफ सुथरा हो। बेशक वहाँ भी बहुत कुछ है जो धूसर है, और उस पर बात होनी भी चाहिए। लेकिन इस प्रसंग में तो यह भी देखा जाना चाहिए कि जो कड़ाई बरती जा रही है वह समय की ज़रूरत है। एक प्रसंग का जिक्र करके इस बात को विराम देना स्वयं प्रकाश हिंदी के बड़े कथाकार हैं। कुछ समय पहले उनकी एक संस्मरणत्मक पुस्तक आई थी - **धूप में नंगे पाँव**। इस पुस्तक में उन्होंने अपने जीवन से जुड़ा एक प्रसंग लिखा है। वे एन.ए. हिंदी की परीक्षा दे रहे थे। जहाँ वे रहते थे, परीक्षा केंद्र वहाँ से चालीस किलोमीटर दूर था। जिस दिन उनका आखिरी पेपर था, संयोग कुछ ऐसा बना कि वे ठीक समय पर परीक्षा केंद्र नहीं पहुँच सके। और वे सिर्फ पाँच मिनट लेट नहीं हुए थे। उस किताब के विवरण के अनुसार वे दो घण्टा देर से पहुँचे। (वैसे वे दो घण्टा नहीं कोई आधा घण्टा देर से पहुँचे थे। यह जानकारी इसलिए कि मैं खुद इस प्रसंग का एक किस्सा था। किताब में जिक्र है। लेकिन कथाकार अतिशयोक्ति करने का हक रखता है।) और प्राचायर्ण ने उन्हें परीक्षा देने दी। (अगर आपके पास यह किताब हो तो देखें पृ. 128-129)। लेकिन, जैसा मैंने कहा, वह समय अलग था। आज जैसा जटिल नहीं था। ऐसा नहीं है कि आज का पूरा शिक्षा तंत्र अमानवीय हो गया है। मज़बूरी यह है कि आज अगर कोई परीक्षा कर्मचारी किसी को ज़रा भी छूट दे दे तो न जाने कितने प्रवाद उठ खड़े हों। और यह भी पता नहीं कि जिसे छूट दी जाए वह उसका सुपान्न है या कुपान्न। क्या पता कुछ देर से आने वाला बाहर से लौक हुए पचें के उतर लेकर भीतर आ रहा हो! क्या पता किसी महिला ने अपने किसी आपभूषण में नकल करने की कोई डिवाइस छिपा रखी हो। क्या पता... क्या पता!

ऐसे में जिम्मेदार पत्रकारिता से, और समाज से भी, यह उम्मीद तो बनती ही है कि वह कमजोर के प्रति सहानुभूति रखते हुए उनके प्रति भी निर्मम न हो जो दिये हुए निर्देशों का पालन करके अपने कर्तव्य का समुचित निर्वहन कर रहे हैं।

-अतिथि सम्पादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,
(शिक्षाविद् और साहित्यकार)

लाख प्रयासों के बावजूद देश की अदालतों में मुकदमों का अंबार कम होने का नाम ही नहीं ले रहा है। एक मोटे अनुमान के अनुसार देश की अदालतों में सात करोड़ से अधिक मुकदमे लंबित हैं। इनमें से करीब 87 फीसदी मुकदमे देश की निचली अदालतों में लंबित हैं तो करीब 12 फीसदी मुकदमे राज्यों के उच्च न्यायालयों में लंबित चल रहे हैं। देश की सर्वोच्च अदालत में एक प्रतिशत मुकदमे लंबित हैं। पिछले दिनों जयपुर में आयोजित एक समारोह के दौरान न्यायालयीय प्रक्रिया और सर्वोच्च न्यायालय में पैरवी करने वाले वकीलों की फीस को लेकर अच्छी खासी चर्चा हुई जो मीडिया को सुर्खियाँ भी बनीं। वहीं अगस्त में कार्य भार संपालने वाले नए मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति यूजू ललित द्वारा अदालत में सुबह साढ़े नौ बजे सुनवाई आरंभ करने की पहल पर भी वाद-विवाद का दौर जारी है। उधर सरकार ने मानसून सत्र में कुछ बदलावों के साथ मध्यस्थता विधेयक लाने का संकेत दिया है तो दूसरी ओर न्यायाधीशों की भर्ती में एकस्थिता लाने के केन्द्र के प्रयास लगभग विफल हो गए हैं।

हालांकि इसमें कोई दो राय नहीं कि न्यायालयों में मुकदमों का अंबार लगा हुआ है तो दूसरी ओर सभी पक्ष इसे लेकर निश्चित भी हैं। सवाल यह है कि मुकदमों के इस अंबार को कम करने के लिए कोई ऐसी रणनीति बनानी होगी जिससे अदालतों का भार भी कम हो

न्यायिक प्रक्रिया लंबी भी न चले, लोगों को समय पर न्याय भी मिले। पिछले पाँच साल में ही देश में लंबित मुकदमों की संख्या चार करोड़ से बढ़कर आज सात करोड़ हो चुकी है। हालांकि लोक अदालत के माध्यम से मुकदमों में कमी लाने की सार्थक पहल अवश्य की गई है पर लोक अदालतों में लाखों प्रकरणों के निबटने के बावजूद हालात में ज्यादा बदलाव नहीं आया है। दरअसल लाखों की संख्या में इस तरह के मुकदमे हैं जिन्हें निपटने के लिए कोई सर्वमान्य समाधान खोजा जा सकता है। मुकदमों की प्रकृति के अनुसार उन्हें विभाजित किया जाए और फिर समयबद्ध कार्यक्रम बनाकर उन्हें निपटने की कार्य योजना बने तो समाधान कुछ हद तक संभव है। कुछ इस तरह के मुकदमे हैं जिन्हें आसानी से निपटने में कोई योजना बन जाए तो मुकदमों की संख्या में कमी हो सकती है। इनमें खासतौर से यातायात नियमों को तोड़ने वाले मुकदमों की ऑनलाइन निपटान की कोई व्यवस्था हो जाए तो अधिक कारगर हो सकती है। इसी तरह से बैंक बाउंस होने के लाखों की संख्या में मुकदमे हैं जिन्हें एक या दो मुहराई में ही निस्तारित किया जा सकता है। इसी तरह से मामूली कड़ासूनी के मुकदमे जिसमें शांति भंग के प्रकरण शामिल हैं उन्हें भी तारीख़ दर तारीख़ के स्थान पर एक ही तारीख़ में निपटा दिया जाए तो हल संभव है। इसी तरह से राजनीतिक प्रदर्शनों को लेकर दर्ज होने वाले



डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

मुकदमों के निस्तारण की भी कोई कार्ययोजना बन जाए तो उचित हो। इससे काम ग्रेविटी के मुकदमों का सहज निस्तारण संभव होगा तो न्यायालयों का समय भी बचेगा।

देश में सबसे ज्यादा मुकदमे रेवेन्यू से जुड़े हुए हैं। गांवों में जमीन के बंटवारे या सीमा निर्धारण को लेकर देश की निचली अदालतों में अंबार लगा हुआ है। इस तरह के मुकदमों के निपटारे में ग्राम पंचायत की कहीं कोई भूमिका तब हो तो शायद कोई स्थाई समाधान संभव हो सकता है। पंच परमेश्वर की अवधारणा कहीं इस तरह के मुकदमों के निपटारे में अधिक सहायक हो सकती है। स्थानीय स्तर पर समझाइस से इस तरह के मुकदमों पर शीघ्र निर्णय को एक संभावना बनती है। हो यह रहा है कि रेवेन्यू के मुकदमें अपील दर

कुल लंबित सात करोड़ मुकदमों का करीब 87 फीसदी देश की निचली अदालतों में लंबित हैं

अपील पीढ़ी दर पीढ़ी चलते रहते हैं और मामूली सा सीमा विवाद लंबी कानूनी प्रक्रिया में उलझ कर रह जाता है। मीडिया टॉयल पर भी अंकुश की आवश्यकता है क्योंकि इससे कुछ हद तक निर्णय प्रभावित होने की संभावना बनती है।

हालांकि इसमें कोई दो राय नहीं कि हमारे देश की अदालतों में ब्रिटेन आदि की अदालतों से कई गुणा अधिक मुकदमों की सुनवाई एक दिन में होती है। केन्द्रीय कानून मंत्री किरेन रिज्जू को माने तो इंग्लैंड में एक न्यायाधीश एक दिन में तीन से चार मामलों में निर्णय देते हैं जबकि हमारे देश में प्रत्येक न्यायाधीश औसतन प्रतिदिन 40 से 50 मामलों में सुनवाई करते हैं। यह इस ओर भी इंगित करता है कि हमारे देश में न्यायाधीशों के पास कार्यभार अधिक है। अधिक काम करने के बावजूद मुकदमों की संख्या कम होने का नाम ही नहीं लेती। पिछले कुछ समय से जिस तरह से पीएलआई को लेकर माननीय न्यायमूर्तियों द्वारा प्रतिक्रिया व्यक्त की जा रही है और जमाना भी लगाया जा

रहा है इसके भी सकारात्मक परिणाम प्राप्त होने लगे हैं। इसी तरह से कोर्ट में केस दायर होने पर गवाह या याचिकाकर्ता के होस्टाइल होने की भी जिस तरह से अदालतों द्वारा गंभीरता से लिया जाने लगा है। उसे उसकी भी परिणाम आने वाले समय में और ज्यादा सकारात्मक होंगे। न्यायालयों की मध्यस्थता के लिए भेजे जाने वाले मामलों में वादी-प्रतिवादी द्वारा गंभीरता नहीं दिखाने से भी हालात अधिक सुधरे नहीं हैं। केन्द्र सरकार अब मध्यस्थता कानून में इसी मानसून सत्र में आवश्यक संसोधित प्रावधानों के साथ पारित करने के लिए गंभीर लगती है। देखा जाए तो अदालतों की सामान्य प्रक्रिया पर लोगों का विश्वास है। चर्चें तरफ से निराश और हाताश व्यक्ति न्याय के लिए न्याय का दरवाजा खटखटाता है। ऐसे में गैरसरकारी संगठनों की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो जाती है कि वे लोगों में अवेयरनेस लाएं और अदालत से बाहर निपटने वाले मामलों को बाहर ही निपटा लें। इसके लिए पूर्व न्यायाधीशों, पूर्व प्रशासनिक अधिकारियों, विरत वकीलों व गैरसरकारी संगठनों या सामाजिक कार्यकर्ताओं की टीम बनाई जा सकती है जो इस तरह के मामलों को समझाइस से सुलझा सके। जिससे न्यायालयों का समय भी बचे और वादी प्रतिवादी का धन और समय बचने के साथ ही सौहार्द भी बना रह सके।

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा,
(वरिष्ठ लेखक)

शहर से लेकर ग्रामीणांचल तक राखी की दुकानें सजी



पावटा कस्बे के बाजार में राखी खरीदती महिलाएं।

पावटा, (निस)। रक्षाबंधन पर्व के लिए राखी की दुकानें सज गई हैं। त्योहार के लिए सजे बाजार में आई राखियाँ आकर्षण का केंद्र बनी हुई हैं।

रक्षाबंधन पर्व पर बाहर रहने वाले भाइयों को अभी से राखियाँ भेजना शुरू कर दिया है। राखी के पर्व के लिये कपड़े, मिठाई और ड्राईफ्रूट से लेकर गिफ्ट आइटम बेचने वाली की दुकानों पर भी

राखी के दामों में करीब 10 से 15 फीसदी का इजाफा

रौनक दिखाई दे रही है। उच्च वर्गीय लोगों के लिये बाजार में सोने और चांदी की सुंदर कलात्मक राखियाँ भी उपलब्ध हैं। पर्व को लेकर नगर से लेकर ग्रामीणांचल तक

राखी की दुकानें सज गई हैं। राखी व्यवसायियों के अनुसार इस बार बाजार में चीन निर्मित लोराए, सौंफिया और रिया के अलावा ओमश्री अशोक चक्र, सहेली, जलाशीष और संगम मार्का राखियों की खासी बिक्री हो रही है। दुकानों पर लोगों की भीड़ लगनी शुरू हो गई है। चाइनीज और मुंबई निर्मित स्टोन की राखियों का बाजार में दबदबा है।

पीबीएम के इमरजेंसी में डिहाइड्रेशन का इंजेक्शन तक नहीं

बीकानेर, (कास)। पलाना के हड़माणाराम को उरटी-दस्त की शिकायत के बाद उनके परिवार पीबीएम के मेडिसिन इमरजेंसी लेकर पहुंचे। डॉक्टर ने मरीज के शरीर में पानी की कमी होना बताकर पर्ची पर डेक्सट्रोस इंजेक्शन लिखा। जब मरीज का रिश्तेदार गणपतराम इंजेक्शन लेने हॉस्पिटल के दवा वितरण केंद्र (डीडीसी) पहुंचा तो फार्मासिस्ट ने पर्ची पर नॉट अवेलेबल (एनए) लिख दिया। गणपतराम उदाहरण मात्र है, जिसे इमरजेंसी इन इंजेक्शन के लिए दर-दर भटकना पड़ा। हॉस्पिटल में रोजाना आने वाले सैकड़ों मरीज गणपतराम की तरह आधी-अधूरी दवाइयों लेकर अपने घर या मरीज के पास पहुंच रहे हैं।

शहर की डिस्पेंसरियों के हाल इससे भी बदतर है। यहां जुकाम, दर्द निवारक, एंटीबायोटिक सरीखी जरूरी दवाइयों भी नहीं मिल रही। शुक्रवार को पुपत दवा वितरण केंद्र (डीडीसी) पहुंचा तो फार्मासिस्ट ने पर्ची पर नॉट अवेलेबल (एनए) लिख दिया। गणपतराम उदाहरण मात्र है, जिसे इमरजेंसी इन इंजेक्शन के लिए दर-दर भटकना पड़ा। हॉस्पिटल में रोजाना आने वाले सैकड़ों मरीज गणपतराम की तरह आधी-अधूरी दवाइयों लेकर अपने घर या मरीज के पास पहुंच रहे हैं।

डिस्पेंसरियों में पर्ची पर एनए लिख रहे

पर निजी फार्मा कंपनियों की दवाइयों लेने में दिलचस्पी दिखा रहा है।

राज्य सरकार की ओर से करीब 1700 तरह की निशुल्क दवाइयों उपलब्ध करवाई जाती हैं। हालांकि बीकानेर में 1000 दवाइयों की ज़रूरत ही आमतौर पर पड़ती है। लेकिन इन दवाइयों में से मरीजों को करीब 30 फीसदी दवाइयों मिल नहीं रही। ऐसे में उन्हें बाहर से महंगी दवाइयों खरीदनी पड़ रही है। पीबीएम हॉस्पिटल और शहर की डिस्पेंसरियों में एमोकसीलिन 625

टेबलेट, सैफक्स 200, सीपोलिसिन 250/500, एंटीकोल्ड, मेटफोर्मिन, डिट्रोफेनॉन, सीट्रजिन, एडोआई-250, सीपीएम, सोविडोन, एंटी कोल्ड सीप, मेरोपेनाम इंजेक्शन, ऑफ्लोक्स आरिनडाजोल टेबलेट, लिनेजोलिन, लेबेटोलो इंजेक्शन, पोविडोन सरीखी जरूरी दवाइयों नहीं मिल रही हैं। मरीजों की यह परेशानी रात को और ज्यादा हो जाती है, जब बच्चा और जानना हॉस्पिटल में महिलाओं को दवाइयों के लिए हॉस्पिटल परिसर से बाहर जाना पड़ता है। पीबीएम हॉस्पिटल में रोजाना करीब 5 हजार मरीजों का आना-जाना होता है। ऐसे में दवाइयों नहीं मिलने से मरीजों को होने वाली परेशानी को समझा जा सकता है। स संबंध में हॉस्पिटल के

सुपरिटेण्डेंट डॉ. प्रमोदकुमार सैनी ने कहा कि प्रशासन जिन औषधि केंद्र को दवाइयों के लिए पहले चरण में करीब 20 लाख रूपए का ऑर्डर दिया था, लेकिन उसके जयपुर स्थित अधिकृत विक्रेता ने दवाइयों की शॉर्टज बत्ता दी। समय-समय पर दवाइयों की लोकल खरीद की जाती है, ताकि मरीजों को डीडीसी के अलावा कहीं भटकना नहीं पड़े। जो दवाइयों डीडीसी पर नहीं मिल रही हैं, उनकी लिस्ट मंगवाकर जल्द ही उनकी लोकल या सरकारी केंद्रों से खरीद कर मरीजों को राहत पहुंचाई जाएगी। सरकार 15 लाख रूपए बिना स्वीकृति दवा खरीद के लिए उपलब्ध कराती है, जिसकी बिल करने के साथ ही दोबारा राशि मिल जाती है।

सोनिका ने कमाल की ड्रिब्लिंग कर दागा गोल

सादुलपुर, (निस)। राष्ट्रमंडल खेलों में रिवार को भारतीय महिला हॉकी टीम ने बेहद मनोमंचक मैच में गत चैंपियन न्यूजीलैंड को पेनल्टी शूटआउट में हराकर पहली बार इन खेलों में ब्राँज मेटल जीत लिया है। वहीं बेहद रोमांचक मैच के निर्धारित चार क्वार्टर पूर्ण होने तक दोनों टीमों एक-एक गोल की बराबरी पर थी। ऐसे में मैच का निर्णय पेनल्टी शूटआउट से होना था, जहाँ न्यूजीलैंड की टीम 1-0 की बढत बना



चुरू जिले के गांव गालड की हॉकी खिलाड़ी सोनिका टांडी तिरंगे के साथ।

पेनल्टी शॉट में सोनिका ने न्यूजीलैंड की गोलकीपर को छकाया

चुकी थी और भारतीय टीम अपना पहला अवसर गंवा चुकी थी। ऐसे में चुरू जिले के अंतिम छोर पर स्थित सादुलपुर विधानसभा क्षेत्र के गांव गालड की बितिशा सोनिका टांडी को पेनल्टी शॉट का अवसर मिला। जिसमें सोनिका ने कमाल की ड्रिब्लिंग करते हुए विपक्षी गोलकीपर को छकाते हुई गोल दायकर भालू कर दिया। इसके बाद भारतीय गोलकीपर सलवा ने अपने

साहसिक प्रयासों से विपक्षी टीम को उभरने नहीं दिया। भारत ने पेनल्टी शूटआउट में मुकाबला 2-1 से जीते हुए राष्ट्रमंडल खेलों में पहली बार महिला हॉकी में ब्राँज मेटल पर कब्जा कर लिया। मैच के अंतिम पड़ाव में सोनिका के गोल करते ही उसके पैरुत गांव गालड व आसपास के गांवों में खुशी की लहर दौड़ गई। वहीं लोगों ने एक दूसरे को मिठाई खिलाकर जश्न मनाया। हॉकी प्रेमी वेदपाल धामोटी ने बताया कि सोनिका टांडी बेहद प्रतिभाशाली खिलाड़ी है, जोकि पूर्वी में भारत को एशिया कप जीताकर चुरू जिले व राज्यस्थान प्रदेश का नाम रोशन कर चुकी है।



राशिफल

सोमवार 8 अगस्त, 2022

सावन मास, शुक्ल पक्ष, एकादशी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत् 2079, ज्येष्ठा नक्षत्र दिन 2:37 तक, ऐंद्रयन् योग प्रातः 6:55 तक, वणिज करण दिन 10:26 तक, चन्द्रमा आज दिन 2:37 से धनु राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कर्क, चन्द्रमा-वृश्चिक, मंगल-मेष, बुध-सिंह, गुरु-मौन, शुक्र-कनक, शनि-मकर, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

रविवार दिन 2:37 तक है। कुमार योग दिन 2:37 से रात्रि 9:01 तक है। भद्रा दिन 10:26 से रात्रि 9:01 तक है। आज कलत्रा के लिए एकदशी, आज चतुर्थ सावन वन सोमवार व्रत वैधुति पूष्य है या कुपान्न। क्या पता कुछ देर से आने वाला बाहर से लौक हुए पचें के उतर लेकर भीतर आ रहा हो! क्या पता किसी महिला ने अपने किसी आपभूषण में नकल करने की कोई डिवाइस छिपा रखी हो। क्या पता... क्या पता!

मेष
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। दिन के मध्याह्न पश्चात अटक नहीं हों। बनेते कार्य विगड़ने का भय बना रहेगा।

वृष
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। दिन के मध्याह्न पश्चात अटक नहीं हों। बनेते कार्य विगड़ने का भय बना रहेगा।

मिथुन
विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। दिनचर्या में सुधार होगा। दिन के मध्याह्न पश्चात अटक नहीं हों। बनेते कार्य विगड़ने का भय बना रहेगा।

कनक
व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

सिंह
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिचितों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के लिए बाहर जाना पड़ सकता है।

कन्या
आर्थिक/वित्तीय मामलों में परिचितों से सहयोग मिल सकता है। संभावित ख़ौत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। परिवार में अतिथियों के आगमन से उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

तुला
आर्थिक कारणों से अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

वृश्चिक
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। परिवार में सुध-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

धनु
अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। दिन के मध्याह्न पश्चात अटक हुए कार्य बनने लगेंगे। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

मकर
आर्थिक व्यावसायिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। दिन के मध्याह्न अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। सुध-मांगलिक कार्यों भाग लेने का अवसर मिलेगा।